- संक्रमित पशुओं की मृत्युतकहो सकती है।

एल.एस.डी.केआर्थिक प्रभावः

त्वचा रोग से गंभीर आर्थिक नुकसान होते है, जैसेः

- दुग्ध उत्पादन में अचानक गिरावट
- क्षतिग्रस्त त्वचा एवं खाल
- वजन में कमी
- अस्थायी या स्थायी बांझपन
- गर्भपात
- संक्रमित पशुओं की असामयिक मृत्यु
- प्रभावित खाद्य सुरक्षा
- चर्मउद्योगों पर इसका सीधा एवं गंभीर प्रभाव
- अप्रत्याशित व्यापार प्रतिबंध
- उपचार एवं टीकाकरण व्यय
- परिसर का कीटाणुशोधन

रोकथाम और नियंत्रणः

- संदिग्ध मामलों की सूचना मिलने पर अविलम्ब स्थानीय पशु चिकित्सा पदाधिकारी पशुचिकित्सालय को सूचना दें।
- स्वस्थ पशुओं का बीमार या संक्रमित पशुओं से तुरंत अलगाव करें।बाड़े में पशुओं की संख्या को सीमित करके भीड़ कम करना, पशुओं के बीच दूरी में वृद्धि और बाहरी गतिविधि पर निरंकुश वायरस के प्रसार को कम कर सकती है।
- प्रभावित गाँवों और पशु चरागाह से अप्रभावित पशुओं को दूर रखने का प्रयास होना चाहिए ।
- संक्रमित पशुओं को तरल भोजन, मुलायम चारा एवं पौष्टिक आहार दें ।
- प्रभावित क्षेत्रों में कीड़े–मकोड़ों की आबादी को कम करने का प्रयास करना चाहिए। इस संदर्भमें कीट नियंत्रण प्रणालियों के प्रयासके लिए विकर्षक और कीटनाशकों के नियमित उपयोग करें।
- पशुशाला, परिसर एवं दूषित वातावरण की अच्छी तरह से सफाई और उचित रसायनों ६ कीटाणुनाशकों से कीटाणुशोधन किया जाना चाहिए । उदहारण के लिए ईथर (20%), क्लोरोफॉर्म, फॉर्मेलिन (1%,) फिनोल (2%), सोडियम हाइपोक्लोराइट (2–3%), आयोडीन यौगिक (1:33 अनुपात), चतुर्धातुक अमोनियम यौगिक (0.5%) का उपयोग श्रेयस्कर रहेगा।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरणः-
डॉ मनोज कुमार, सहायक प्राध्यापक,
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय
विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-
प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय परिसर पटना-14
Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in
Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

RE: 8051910781/ August/ 2022

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2022-44

गांठदार त्वचा रोगः एक उभरता हुआ विषाणु रोग

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

गांठदार त्वचा रोगः एक उभरता हुआ विषाणु रोग

पृष्ठभूमि

गांठदार त्वचा रोग या लम्पी स्किन डिजीज (एल.एस.डी.) गोवंशीय पशु की आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण विषाणु जनित रोग है। यह रोग विभिन्न नामों से प्रचलित है। जैसे कि "गांठदार त्वचा रोग","स्यूडो अर्टीकेरिया", "छद्म पित्ती", "गो–बसंत" "नेथलिंग वायरस रोग" या"एक्सेंथेमा नोड्युलरिस बोविस"। मच्छर, मक्खी और किलनी जैसे रक्तपोषी आथ्रीपोड वेक्टर इस वायरस के वाहक होते हैं एवं रोग को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यद्यपि गांठदार त्वचा रोग सामान्यतः त्वचा को प्रभावित करता है, परन्तु इससे शरीर के अन्य भाग आक्रमित हो सकते हैं। तीव्रज्वर, लसीका ग्रंथि में सूजन, त्वचा पर गांठें, क्षीणता, दूध उत्पादन में कमी और बांझपन इस रोग की विशेषता हैं । अधिकांश पशु धीरे–धीरे ठीक हो जाते हैं, परन्तु गंभीर रूप से प्रभावित पशु मर सकते हैं। इसके आर्थिक प्रभाव के कारण, विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (ओ.आई.ई.), ने एल.एस.डी. को अधिसूचनीय रोग की श्रेणी में रखा है। अतः किसी भी सदस्य देश में इस रोग की समपुष्टि होने पर ओ.आई.ई.को इसकी सुचना देना अनिवार्य होता है। विगत दो वर्षों से भारत के विभिन्न क्षेत्रों में गांठदार त्वचा रोग का फैलाव तेजी से बढ़ा है जिसके परिणाम स्वरूप ग्रामीण समुदायों की आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े हैं ।

रोग की उत्पत्ति

पहली बार यह रोग 1929 में उत्तरी रोडेशिया (जाम्बिया) में अभिलिखित किया गया था, जहां से रोग अन्य दक्षिणी अफ्रीकी देशों में फैल गया। शुरुआत में, एल.एस.डी. मुख्यतः अफ्रीका तथा इजराइल तक सीमित था परन्तु कालांतर में यह विश्व के अन्य देशों में व्यापक रूप में फैलने लगा । अगस्त 2019 में पहली बार भारत तथा भारतीय उपमहाद्वीप में इस रोग के व्याप्तता की पुष्टि हुई।

रोग कारक

गांठदार त्वचा रोग (एल.एस.डी.) एक विषाणु जनित रोग है, जो पॉक्सविरिडे वंश के लम्पी स्किन डिजीज वायरस (या नीथलिंग वायरस) के संक्रमण के कारण होताहै।

एल.एस.डी.से प्रभावित होने वाले पशु

एल.एस.डी. मुख्य रूप से गाय तथा भैंस जाति एवं कुछ जुगाली करने वाले वन्य पशुओं में पाया जाता है। इस रोग से गौ एवं भैंस जाति के सभी उम्र और नस्ल के पशु प्रभावित होते हैं। देशी नस्ल के पशु की तुलना में संकर या विदेशी नस्लके पशु , जैसे होल्स्टीन फ्रीजियन और जर्सी नस्ल अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील हैं। मनुष्य एल.एस.डी. से प्रभावित नहीं होते हैं।

एल.एस.डी.से प्रभावित होने वाले पशुजन्य

एल.एस.डी. मुख्य रूप से गाय तथा भैंस जाति एवं कुछ जुगाली करने वाले वन्य पशुओं में पाया जाता है। इस रोग से गौ एवं भैंस जाति के सभी उम्र और नस्ल के पशु प्रभावित होते हैं। देशी नस्ल के पशु की तुलना में संकर या विदेशी नस्लके पशु , जैसे होल्स्टीन फ्रीजियन।
और जर्सी नस्ल अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील हैं। मनुष्य एल.एस.डी. से प्रभावित नहीं होते हैं।

चिकित्सीय लक्षण

विषाणु के प्रवेश के 3–28 दिनों के उपरांत लक्षण प्रकट होने लगता है व संक्रमित पशुओं में निम्न लक्षण परिलक्षित होते हैंः

- संक्रमित पशुओं में अश्रु का बहना और तीव्रज्वर जैसे प्रारंभिक लक्षण अभियक्त होते है, अपितु कुछ पशुओं

में ज्वर नहीं होता।

- अवसाद, भूख की कमी और क्षीणता आने लगता है, जिससे दुधारू पशुओं के दूध उत्पादन में उल्लेखनीय कमी आ जाती है।
- पशुओं की गतिशीलता घटने लगती है।
- नाक और आंखों से श्राव, अत्यधिक लारआना आरम्भ हो जाता है।
- बुखार की शुरुआत के दो दिनों के बाद , लिम्फ ग्रंथियों का सूजनआ जाता है।
- त्वचा पर अलग–अलग संख्या में गाँठे (1–5 सेंटीमीटर व्यास) विकसित होने लगते हैं, और कुछ पशुओं में पूरे शरीर पर उभर आते हैं ।विशिष्ट गांठ सिर, गर्दन, छाती, पेट, जननांगऔर थन की त्वचा पर दृष्टिगोचर हो जाता है। इस रोग के घाव नाक और थूथन पर भी विकसित होते हैं। ये गाँठें धीरे–धीरे सख्त हो जाती है एवं उनके केंद्र में एक गड्ढा (डिंपल) बन जाता है, जिसे " सिटफास्ट "या "पर्यान व्रण " भी कहते हैं। यद्यपि कुछ गाँठ यथावत रह जाते हैं परन्तु कभी कभी पपड़ी उखड कर एक छिद्र छोड़ देते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप गाँठें खुले घाव में परिवर्तित हो जाती हैं, जो बैक्टीरिया या कीड़े से संक्रमित हो सकते हैं। शरीर के उदर भाग, जैसे गलकम्बल, छाती, अंडकोश और योनी में सूजन हो सकती है जिससे पशु हिलने–डुलने में अनिच्छुक हो सकते हैं। गंभीर रूप से प्रभावित पशुओं में, आंख और मुंह के मृत–ऊतक अल्सर का रूप ले लेते हैं, जिनसे अत्यधिक लार, अश्रु प्रवाह और नाक रीसाव होने लगता है । इन सभी स्रावों में एल.एस.डी. के विषाणु निष्कासित होते रहते हैं । एल.एस.डी. के घाव, गले, श्वांसनली, फेफड़े और भोजननली में भी हो सकते हैं।
- कुछ के संक्रमित पशु, पैर में सूजन के कारण लंगड़नें लगते हैं।
- गांठों के ठीक होनें में समय लगता है और पशुओं की खाल पर लम्बी अवधिया अनिश्चित काल तक निशान रह सकते हैं।
- सामान्यतः संक्रमित पशु 2–3 सप्ताह के अंतराल में स्वस्थ हो जाते हैं परन्तु दुधारू पशुओं में कई हफ्तों तक दूध उत्पादन में कमी रहती है।
- बैलों में स्थायी या अस्थायी बाँझपन विकसित हो सकता है एवं गर्भवती गायों का गर्भपात संभव है।